मुक्त चिन्तन

News Letter

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्गत अधिनियम संख्या 10, 1999 द्वारा स्थापित

मुक्त चिन्तन

23 दिसम्बर, 2023

मुक्त विश्वविद्यालय में अटल जन्मोत्सव पर हुआ काव्य पाठ का आयोजन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज में सुशासन सप्ताह के अंतर्गत अटल जन्मोत्सव पर सोमवार दिनांक 23 दिसम्बर, 2024 को हिंदुस्तानी एकेडमी के सहयोग से काव्य संध्या का आयोजन किया गया। आमंत्रित कवियों को मुख्य अतिथि श्री सुनीत राय, डीआईजी रेंज, सीआरपीएफ, प्रयागराज, प्रोफेसर सत्यकाम, माननीय कुलपति, उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय तथा श्री मनोज गौतम कमांडेंट आर ए एफ ने स्मृति चिन्ह एवं अंगवस्त्र से सम्मानित किया।

अतिथियों का स्वागत संयोजक प्रोफेसर सत्यपाल तिवारी ने किया। समारोह का संचालन डॉ0 साधना श्रीवास्तव ने एवं धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव कर्नल विनय कुमार ने किया।

इस अवसर पर आमंत्रित कवियों ने अपनी रचनाओं से जमकर तालियां बटोरी और माहौल को गुंजायमान कर दिया।

समारोह का संचालन करती हुई डॉ0 साधना श्रीवास्तव

दीप प्रज्वलित कर समारोह का शुभारम्भ करते हुए एवं अटल बिहारी बाजपेयी जी तथा मॉ सरस्वती जी के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए माननीय अतिथिगण

विश्वविद्यालय कुलगीत प्रस्तुत करते हुए श्री निकेत

अतिथियों का स्वागत करते हुए संयोजक प्रोफेसर सत्यपाल तिवारी

माननीय अतिथियों को पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका स्वागत करते हुए विश्वविद्यालय परिवार के सदस्यगण

माननीय अतिथियों एवं कवियों सम्मान करते हुए विश्वविद्यालय परिवार के सदस्यगण

काव्य संध्या का संचालन करते हुए कवि डॉ0 श्लेश गौतम

हो कोई कितना भी नजदीकी पर उचित दूरी जरूरी है– डॉ विनम्र सेन

युवा कवियत्री मिस्बाह इलाहाबादी ने अटल जी की शख्सियत को याद करते हुए कहा साफ सुथरी तबीयत के मालिक थे तुम। तुम सभी के लिए गंगाजल हो गए। भूल सकता नहीं कोई तुमको कभी। तुम अटल थे अटल से अटल हो गए।
वरिष्ठ साहित्यकार प्रोफेसर वशिष्ठ अनूप, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने शानदार रचना प्रस्तुत करते हुए कहा तुलसी के जायसी के रसखान के वारिस हैं । कविता में हम कबीर के ऐलान के वारिस हैं। हम सीकरी के आगे माथा नहीं झुकाते। कुंभन की फकीरी के अभिमान के वारिस हैं।

मुकेश मानक, कानपुर ने बड़ी गंभीरता से सुनाया थोड़ी इचकी लिया क्या सांसों ने, लोग समझे कि मर चुका हूं मैं।
डॉ कमलेश राय ने सुनाया नेह बिरवा संजो के देख दत। बीज ऊसर में बोके देखत दत। दुरूख का केतना सहे के। एक दिन राम होके देख दत।

डॉ0 विनम्र सेन सिंह ने जिंदगी के अर्थ को परिभाषित करते हुए कहा जिंदगी के रास्ते पर अब ठहर कर चलना जरुरी है, लोग कहते हैं डरो मत पर अब तो डरना भी जरुरी है। हैं बहुत नकली यहां रिश्ते इसलिए ये याद रखना तुम, हो कोई कितना भी नजदीकी पर उचित दूरी जरुरी है।

कवि पीयूष मालवीय ने सुनाया कवि वंश विभूषण कलमकार, जग रुदन करे तुमको पुकार। यम की थी कैसी यह कटार ? जिससे तुमने ठानी न रार।

डॉ श्लेश गौतम ने आमंत्रित कवियों में जोश भरते हुए कहा लिखा किया रह जाएगा, रहता नहीं शरीर। इसीलिए मरते नहीं तुलसी सूर कबीर।

अमित शुक्ला रीवा की हास्यपूर्ण रचनाओं ने माहौल में रंगत पैदा कर दी। उनकी यह गंभीर रचना बहुत पसंद की गई। डर है तुमको तो मत आना, बिटिया तुम बस रानी बनकर। आना हो धरती में तो, आओ तुम मर्दानी बनकर।
अतुल बाजपेई, लखनऊ की देश भक्तिपूर्ण रचना मैं भारत हूं ने पूरे सभागार में जोश भर दिया।

राधा शुक्ला प्रयागराज ने नारी शक्ति की मजबूती के लिए सुनाया मजबूर नहीं मजबूत बनेगी अब नारी, हंस कर अपना जीवन काटो तुम प्यारी। ओ गृहणी गृह के कार्य अंतहीन होते हैं। तो स्वतरू हेतु कुछ श्रम कर लो प्यारी नारी।

डॉ वंदना शुक्ला प्रयागराज ने सुनाया महिमा जिसकी अद्भुत अपार, कल कल जमुना की धवलधार। जय–जय त्रिवेणी जय, जय प्रयाग जय पुण्य भूमि जय संस्कार।

काव्य पाठ करते हुए कविगण

मुख्य अतिथि सुनीत राय

माननीय कुलपति प्रो0 सत्यकाम

राष्ट्रगान

मुख्य अतिथि सुनीत राय कमांडेंट आर ए एफ, श्री मनोज गौतम, कमांडेंट आर ए एफ, श्री गोपाल जी पाण्डेय प्रशासनिक अधिकारी हिंदुस्तानी एकेडमी आदि उपस्थित रहे।